

# वार्ता-साहित्य

( एक वृहत् अध्ययन )

लेखक

डा० हरिहरनाथ टण्डन



बल्लभ रिसर्च इंस्टीट्यूट, जतीपुरा (मथुरा)

के

तत्वावधान में

भारत प्रकाशन मन्दिर,

अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

INDIA OFFICE

LIBRARY

प्रकाशक  
भारत प्रकाशन मंदिर,  
अलीगढ़ ।

मूल्य १५)

मुद्रक  
आदर्श प्रेस  
अलीगढ़ ।

वचनामृत-६

विचारै छै ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 विधि नै दिवसै कल्याण यव ॥ अथ सवता सवत ॥  
 भोगतं उछु चय यौ नै दिवसै स्यापान ॥ अथ सवता सवत ॥  
 जीपध्यास्या हुता ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 अथ कल्याण अथ गज प्रसंग क ह्ये ॥ अथ सवता सवत ॥  
 अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥

सं० १७९६ वाली वचनामृत की पोथी में वि० सं० १६९३ वैसाख शुक्ल  
 छठ का प्रसंग इसमें मूल लेखक की साक्षात् उपस्थिति की सूचना  
 मिलती है । अतः मूल लेखक की पोथी की यह सं० १७९६  
 वाली प्रतिलिपि पोथी है ।

वचनामृत-७

वधाई करि कै गाइ ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 गाम ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 सोसा सकै छै दिवाइ ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 सोसा नद सा सजी साव यो ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 सक भयो ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 नै नै विभी चार की यो ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 क ह्ये ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥  
 नया यो ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥ अथ सवता सवत ॥

नन्ददासजी के तुलसीदास के भाई होने का उल्लेख है ।

नाथजुने मी गित बराय जनुने आये दीनी तब आजुनेने सोलगाये वें फेरि दीनी तब रायजुनेने अरे  
मेधरी पाछें नो जनको पधारे आजुतो नो जन बरि वें पोटे पाछे आरायजुतो गोपालजुने चर पधारे  
तब पोथी गोपालजूनों दीनी तब पोथी बीबी बीबी वी वी गदगद वें ठ जये ॥ पाछे नारायणदासने स्वयं  
आं बुलायो तब पोथी लिखाई सोउ न दोय प्रति वीनी एव उ न वी दीनी दूसरी लेख पासर हा ॥  
सो गोपालजु रायजुने जीनि नाही ॥ सो समेहनी वें आगे वहे सो वा वें ये वें ओ रस्मेहारहे सोवाने  
अनि वें वहात बउ न ब्रह्मो रहली स्वाये देहू गतब आये वें वही तब उ न लीखि दीनी ॥ एसे प्रति  
पीयसा तजरी ॥ तब इह प्रति धन जो नाही योपरा वें तिन देषी तब आजुने आगे ब्यात वही ॥ तब आ  
जु यो वें पो जनीयो ॥ वे सब बुलाये ॥ परस्पर पूछे ॥ पाछे नीनी जो रायजुने वी प्रहे तब व्रह्मो जो गो  
पालस्तु प्र गट नरी ज गवत ही छ्यामीनी ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
सो श्रीप्रदलमो ह न जु वी सेवा न ली नी ति सो नर ते गोपालदास आपनौ तन वी र्तेन वरुते ॥

॥ श्री श्री लयनम ॥ एक सप्तमे गोवर्धनदास परमजागृतो उ तमसो उ जेतमे कृष्णभट्टे धरया हे  
सो श्री लयनमे आगो नलोकीनो ॥ नोजन वृद्धो ॥ नोजन वृद्धि वेठे तव नट जाने वृद्धो वृद्ध सुनायो ॥  
रात्रि दीवस वै सवन व्रीवा ती करे सो वरते वरते ति नदीव सति नरा श्री वीति नमः ॥ आये दीवस  
देह व्री सुधि नदी त व नदी एीने उन व्री र्ना न वर वायो आ हा पू साद जा वायो सो आ ग्या श्री गि व  
अपने देस व्री चले ॥ तव श्री लयनमे आये ते लिखि सो दिन प्रति दिन को पाठ करे ॥ और व्री उ  
न गवदी वै सव आवेता सो वृहो ॥ यो वर ते नट जु को सरी रथ को तव गो विंद नट वेरा सो वृहो  
आवा ए पोथी अरु नो धर वी सो न सव श्री गो कुल पठ शी यो ॥ त ए उ परी त गो विंद नट श्री गो कु  
ल नाथ जु वे से व व ॥ सो ज व श्री गो कुल आ ए ॥ तव श्री लयनमे श्री गो कुल नाथ जु दी स्वाये ॥ तव  
श्री गु सी री जु प्र सी न न ए न ट जु ने श्री जु वे म न व्री वृ त जी नि ॥ सो प्र थ म नी उ नै वे द न श्री व ल न ने  
दी यो ॥ श्री गु सी री जु को आ से ज्या न्यो ॥ सो गो विंद नट ने वी हो त ने ट पठ शी जी ति नी ति वे म नो  
र व व्री ए ॥ सो ए से वर ते वो हो त दर्ष वी ते ॥ तव ने न व ल घ टो ॥ तव वी पार वी यो पोथी श्री  
गु सी री जु ने श्री आ ग व त सु बो ध नी टी वारी प नी स व पोथी अरु ने ट ये स व ज व च ले त व उन व्री  
सो पी वृ हा आव ल न वे आ जे ध री अो अरु वृ ही आ वा प व्री व सु वे रा पा वे ॥ वे वे स व च ले सो श्री  
गो कुल आ यो ॥ श्री गो कुल नाथ जु वे आ गे रा खि ने ट और पोथी ॥ पत्र माहा प्र जु ने वी च्यो त  
व हृ दी न रि आ यो ॥ अरु वृ ही य ह ने वे द न थि त नी वृ ही त व पोथी श्री ह र्त सो बो लो ॥ तव वी व  
छोटी चो प री नी वृ सी ॥ तव वी ची ॥ वी चि वें आं खि सो ल गा डी अरु हृ दी न रि आ यो ॥ सो नित  
गं ध पाठ वृ ह ते ॥ ता व्रे पा छे और व्री पाठ कर ते ॥ ए व वार्ता प स वा दो डी ॥ वी चि वें पे टी मे ध रि  
वे तारो मारि वृ नोजन व्री प धारें ॥ यो वर ते व ह त व र स वी ते ॥ तव ने न व्री प्र नार म यो तव श्री रा  
व जु सो वृ हा व्रे पोथी पे टी मे हे सो ला यो ॥ तव श्री रा ये जु ने पे टी वी लि वें पोथी श्री ह स मे दी नी सो  
ल नी ले व रि ने न सो ल गा डी फेरि रा य जु व्री दी नी रा य जु ने पे टी मे ध री सो नित्य यो व रें सो ए वृ ह  
व स रा य जु ने दे खी त व नी व्री ला गो ॥ तव शी न व्रे श्री अ श्री गो पा ल जु हू ते ॥ सो वा त श्री रा ये जु ने  
वृ ही ॥